

Organization

1- About us

परिचय

असम सत्र सभा, एक पंजीकृत सामाजिक-सांस्कृतिक संगठन है, जो असम के सत्रों के लिए छात्र संगठन की तरह कार्य करता है, जिसका उद्देश्य महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव की धार्मिक और सामाजिक-सांस्कृतिक शिक्षाओं को सुरक्षित करना और प्रसार करना था। सन 1915 ईस्वी में संत संमेलनी के रूप में इसकी शुरुआत के साथ, 1945 में सत्र संघ एवं 1990 में सत्र महासभा के रूप में यह संगठन सत्रीय संस्कृति के विकास एवं प्रसार के क्षेत्र में कार्य कर रहा है। असम राज्य एवं कोच बिहार में कुल 862 सत्र हैं। मेघालय, अरुणाचल प्रदेश और नागालैंड में कई नामघर हैं, जो काफी लंबे समय से सत्रीय संस्कृति का अनुसरण कर रहे हैं।

डॉ. अर्शिया सेठी के शब्दों में, "जिस तथ्य ने असम में सत्र महासभा को एक महत्वपूर्ण संस्था बनाया, वह यह है कि इसका उदय व शिष्ट स्वनिर्धारित कार्यवृत्ति के संबंध में आत्म चिंतन से हुआ। यह एक आदर्शवादी लक्ष्य से अभिप्रेरित है, जो आवश्यकता पड़ने पर सरकारी और गैर-सरकारी सहयोगों को खोजता है और यह सांगठनिक कार्यों द्वारा क्रमबद्ध रूप से कार्य करता है।"

असम सत्र महासभा उन सभी समस्याओं की ओर ध्यान आकृष्ट करने में सफल रहा है, जिनका सामना सत्र कर रहे हैं, कहे यह मूल्यवान धार्मिक वस्तुओं की चोरी हो या उनकी ज़मीनों का अवैध अतिक्रमण हो अथवा दूसरे मतों में मतांतरण हो। असम सत्र महासभा द्वारा चोरियों की व्याख्या राष्ट्रीय नुकसान के रूप में की जा रही है। धन के लालच या अन्य कारणों से लोगों के अन्य मतों में मतांतरण के प्रत्युत्तर में, असम सत्र महासभा पुनर्मतांतरण की प्रक्रिया अपना चुकी है।

महापुरुष शंकरदेव द्वारा बताए गए जीवन के आध्यात्मिक मार्ग का संरक्षण और प्रसार जोरहाट में निर्मित नामघर में असम सत्र महासभा द्वारा निरंतर किया जा रहा है, जो संगठन को नियमित क्रियाकलापों को करने के लिए साजो सामान उपलब्ध कराता है। एक सुनिर्मित प्रेक्षागृह भी दूसरे समुदायों से संबंधित वर्षों को आगे बढ़ाने का प्रबल अवसर उपलब्ध कराता है। यहाँ यह उल्लेख करना भी आवश्यक है कि निर्माण कार्य के लिए लगभग एक एकड़ माप का एक जमीन का टुकड़ा निर्माण कार्य के लिए असम चाय कंपनी द्वारा दान में दिया गया है।

असम सत्र महासभा ने पुरानी पाण्डु ल पर्यो और प्रारम्भिक गुरुओं द्वारा लखी गयी पुस्तकों के संरक्षण को प्रोत्साहित किया है। असम सत्र महासभा द्वारा असम और असम के बाहर के लोगों के प्रयोग हेतु कई पुस्तकों को प्रकाशित किया गया है। 'कीर्तन' असम में वैष्णववाद के प्रमुख अनुबंधों में से एक है। यह पत्र पुस्तक स्वर्गीय चंद्रकांत महंता द्वारा अनुवादित की जा चुकी है। असम सत्र महासभा ने इस पुस्तक को 1990 में प्रकाशित किया। द्वितीय संस्करण दिसंबर 2014 में असम सत्र महासभा, नई दिल्ली के प्रबंधन में प्रकाशित किया जा चुका है। संगठन के अंतर्गत, प्रकाशन समिति का प्रकाशन संभाग, पुस्तकों, प्रचार समग्र्यो और एक वार्षिक पत्रिका, 'सत्र मंजरी' की देख-रेख करता है।

अपना योगदान देने और समाज में शांति और एकता बनाए रखने के लिए असम सत्र महासभा ने पूरे असम में शांति यात्रा की शुरुआत की। असम सत्र महासभा ने अपने श्रमयुक्त उत्साह द्वारा असम के डब्रूगढ़ विश्व विद्यालय के अंतर्गत, असम सत्रीय संगीत महा विद्यालय के नाम से राजबारी, जोरहाट में एक संगीत कालेज की स्थापना की। असम सत्र महासभा और सत्रीय संस्कृति से जुड़े डा० भूपेन हजारिका जैसे प्रख्यात व्यक्तित्वों के प्रयासों के परिणामस्वरूप 15 नवंबर 2000 को संगीत नाटक अकादमी ने भारत में सत्रीय नृत्य को शास्त्रीय नृत्य के रूप की परिचय दी है।

परिचय की तिथि को यादगार बनाने के लिए असम सत्र महासभा इस दिन को प्रत्येक वर्ष "सत्रीय संस्कृति दिवस" के रूप में मनाती है जिसमें असम और नई दिल्ली में सत्रीय संस्कृति के विशेष लक्षणों को प्रदर्शित किया जाता है। सत्रीय संस्कृति में दूसरे समुदायों की भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए, असम सत्र महासभा "सेतुबंध भावना समारोह" का आयोजन कर रही है, जहां असम के विभिन्न समुदाय अंक्या भावना के प्रदर्शन में भाग लेते हैं। समारोह का प्रथम आयोजन 2003 में गुवाहाटी में श्रीमंत फाउंडेशन के सहयोग से किया गया था और तब से समारोह नियमित अंतराल पर असम सत्र महासभा द्वारा आयोजित किया जाता है।

असम सत्र महासभा ने सत्रीय संस्कृति और वरासत के संरक्षण और प्रचार के उद्देश्य के साथ "परीक्षा परिषद" और "सत्रीय संस्कृति चर्चा केंद्र" की स्थापना की। कई प्रशिक्षण केन्द्रों के साथ यह संस्था, सत्रीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं का मानकीकरण करने के लिए एक सुगठित पाठ्यक्रम का संचालन कर रही है।

असम सत्र महासभा, असम में विभिन्न सत्रों के संरक्षण के लिए केंद्र सरकार दी गयी राश के वतरण में सहायता करती रही है। सत्रों की ओर से असम सत्र महासभा के सुनियोजित प्रतिनिधित्व के परिणामस्वरूप सत्रों द्वारा सामना की जा रही कठिनाइयों समाज के प्रति कर्तव्यों के निर्वहन की जरूरतों को मान्यता मली है। संगठन के कुछ लोगों और प्रवासियों द्वारा कब्जा की गयी भूमियों के वरुद्ध

व धक और राजनैतिक कार्यवाही करने के बाद सत्र से संबन्धित भूम के पुनर्ग्रहण के लए कई कदम उठा चुका है। सत्र असम के 39 सत्रों से संबन्धित 2000 एकड़ भूम, जो अवैध रूप से कब्जा की जा चुकी है, के संबंध में महासभा सरकार के समक्ष दस्तावेजी प्रमाण प्रस्तुत कर चुकी है । भूम से प्राप्त राजस्व में कमी, सत्रों के विकास में बहुत बड़ी वत्तीय बढ़ा बन चुका है ।

Organisational Structure

संगठनिक संरचना

सांस्कृतिक व्यवस्था को चलाने और उसे बनाए रखने, सत्रों को संरक्षित करने और सभी सत्रों के छाता संगठन के रूप में कार्य करने तथा सत्रीय संस्कृति के प्रोत्साहन के लए दिन-प्रतिदिन के प्रयासों की देखभाल करने के लए अपनी सतर्क जिम्मेदारी का निर्वहन करते हुए, असम सत्र महासभा काफी सीमा तक एक सुपरिभाषित संरचना के रूप में निर्भर रहती है । चूक वषय और क्षेत्र व्यापक है, इस लए संगठनिक व्यवस्था मजबूत है । असम सत्र महासभा के कार्यकारी सदस्यों की सूची नीचे दी गयी है, जिनका प्रायः निरंतर दो वर्ष का कार्यकाल होता है । महासभा के अध्यक्ष का चुनाव मतदान प्रक्रया द्वारा होता है जिसमें असम सत्र महासभा की व भन्न जिला स्तरीय सभाओं के कार्यकारी समिति के सदस्य भाग लेते हैं ।

President

Sri Jitendra Nath Pradhani, Satradhikar, Sri Sri Dham Ramaraikuthi Sattra Samiti (Satrasal), 9085378736

Working President

Sri Haridev Goswami, Satradhikar, Garamur Saru Sattra, Majuli, 9435203306

Vice-President(s)

Sri Nripen Roy, Bongaigaon

Sri Dwijendra Narayan Goswami, Nagaon

Sri Bhabha Goswami (Advocate), Jorhat

Sri Akhil Mahanta, South Kamrup, 8011744376

Sri Krishna Kant Mahanta (Advocate), Guwahati

Sri Munindra Mahanta, Dhemaji

General Secretary

Sri Kusum Kumar Mahanta, Guwahati, 9706047998

Secretary

Sri Hemanta Bijoy Mahanta, Bishwanath Chairali, 9859216878

Sri Achyut Barman, Bajali, 9864394106

Sri Dipak Baruah, Charaideu

Sri Ajit Kumar Das, Goalpara, 9864647722

Trasurer

Sri Bhubaneshwar Mahanta, Morigaon

Organising Secretary

Sri Bhaben Goswami, Dhakuakhana

Sri Udhav Das, Barpeta

Sri Pradip Kumar Nath, Sonitpur

Sri Pradip Goswami, New Delhi

Cultural Secretary Sri Ajoy Baruah, Sivasagar- 7896253883

Magazine secretary Sri Kishore Kumar Das, Balaji- 9954256914

Convenor (Trust Fund): Sri Babulal Gaggar, Jorhat- 9435052427

Convenor (Nitya Sanchay Puji): Sri Ranjan Mahanta, Sivasagar- 9435355120

“सत्रीय संस्कृति चर्चा केंद्र”

“सत्रीय संस्कृति चर्चा केंद्र” की स्थापना असम सत्र महासभा द्वारा 1984 में की गयी थी। प्रारम्भ में सत्रीय संस्कृति के व भन्न पहलुओं पर युवा छात्रों को संगठन के कार्यालय में प्र शक्षण की शुरुआत हुई, और परिणामस्वरूप इसके क्षेत्रा धकार में कई संगीत वद्यालयों की स्थापना की गयी। वद्यालयों का मूल उद्देश्य छात्रों को सत्रीय नृत्य, बरगीत, और खोल-बादन तथा सत्रीय संस्कृति से संबन्धित अन्य संगीत व नृत्य संबन्धित प्र शक्षण देना था। एक व्यस्थित पाठ्यक्रम के लए, असम सत्र महासभा द्वारा पाँच वर्षीय पाठ्यक्रम तैयार कया गया। संबन्धित शाखा में पाठ्यक्रम पूर्ण करने के पश्चात, छात्र को असम सत्र महासभा द्वारा (बी. म्यू) के समकक्ष "वशारद" की उपा ध प्रदान की जाती है।

महासभा द्वारा तैयार पाठ्यक्रम के आधार पर परीक्षा के सुचारु संचालन के लए "परीक्षा परिषद" के नाम से एक परीक्षा बोर्ड का गठन कया गया। वर्तमान में असम सत्र महासभा द्वारा संचालत लगभग 91 सत्रीय वद्यालय कार्य कर रहे हैं और वे राज्य के एक छोर से दूसरे छोर तक स्थित हैं। पाठ्यक्रम के अनुसार वद्यालयों की शक्षा का पर्यवेक्षण व मानक के अनुसार परीक्षा आयोजित करने के लए "परीक्षा स चब" परीक्षा बोर्ड का प्रभारी होता है। वर्तमान में श्री हीरेंद्र नाथ महंता "परीक्षा स चब" हैं और "परीक्षा परिषद" संबन्धित कसी जानकारी के लए उनसे +9194350-96825 पर संपर्क कया जा सकता है।

ये संस्थाएं इच्छुक व्यक्तियों द्वारा महासभा के निर्देशन में चलायी जा रही हैं और सरकार से कोई वत्तीय सहायता प्राप्त नहीं हुई है। नियमानुसार, दिये गए पाठ्यक्रम के अनुसार पाठ्यक्रम का संचालन करेगी और महासभा के परीक्षा बोर्ड द्वारा संचालत परीक्षा में भाग लेगी। असम सत्र महासभा, सत्रीय चर्चा केंद्र से पास होने वाले छात्रों के लए वशव वद्यालय द्वारा संगीत व नृत्य वष्यों में चलाये जा रहे शै क्षक पाठ्यक्रम में रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के लए डब्रूगढ वशव वद्यालय के साथ कार्य कर रही है।

केंद्र को असम सत्र महासभा द्वारा तैयार कर गए पाँच वर्षीय पाठ्यक्रम के अनुसार छात्रों को प्रशिक्षित करना होता है। इन पाँच वर्षों में वर्ष के विशेषज्ञों और प्राधकारियों से निर्मित एक अलग परीक्षक बोर्ड द्वारा परीक्षा का संचालन किया जाता है। परीक्षा सैद्धान्तिक और प्रयोगिक दोनों प्रकार की होती है। सैद्धान्तिक व प्रयोगिक परीक्षा में प्रत्येक वर्ष के लिए न्यूनतम प्राप्तांक निश्चित होते हैं।

गायन के पाठ्यक्रम में प्रथम वर्ष में अशोवरी, धनश्री व बसंत राग के साथ आधारभूत शास्त्रीय संगीत की शिक्षा दी जाती है। गायन के भाग में चबा, दुलरी और लेसारी में घोषा के पाठ की शिक्षा दी जाती है। द्वितीय वर्ष के पाठ्यक्रम में, राग श्याम, संधूरा, भटियाली और कल्याण को वस्तुतः रूप से पढ़ाया जाता है। इस स्तर पर एक उपकरण के रूप में ताल के प्रयोग की शिक्षा दी जाती है जिससे इसका प्रयोग कीर्तन के क्रयान्वयन में किया जा सके। तृतीय वर्ष में, भोटिमा के साथ व भन्न रागों सहित बोरगीत, तोताया और चपाया की शिक्षा दी जाती है। चौथे और पांचवें वर्ष में, उच्च स्तर के रागों और दिन के व भन्न भागों में उनके निष्पादन की शिक्षा दी जाती है। इसी प्रकार, बायन और सत्रीय नृत्य के लिए भी वस्तुतः पाठ्यक्रम उपलब्ध है। पाठ्यक्रम डॉ. केशवानन्द देवगोस्वामी, डॉ. जगन्नाथ महंत, पद्मश्री जतिन गोस्वामी और श्री पुण्यव्रतदेव गोस्वामी द्वारा तैयार किया गया है। अनुकरण हेतु पाठ्यपुस्तकों की वस्तुतः सूची भी दी गयी है।

असम सत्र महासभा से संबद्ध संगीत स्कूलों के नाम उनके पते के साथ इस प्रकार हैं

महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव

“श्रीमंता सोनकोरो हरी भकतर

जाना जेनो कल्पोतोरु;

ताहन्त बिनाई नहीं नहीं नहीं

आमार पोरोमो गुरु!!”

(नाम घोसा, महापुरुष माधवदेवा)

महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव 15वीं सदी के असमीया समाज को दैवीय प्रकाश की तरह मले जो सभी बुराइयों व सामाजिक संघर्ष का सामना कर रहा था। बुरी ताकतें अपने चरम पर थीं तथा धर्म, जाति और प्रजाति के नाम पर सरलता से प्रभावित कए जा सकने वाले लोगों के मस्तिष्क को प्रतिकूल रूप से प्रभावित कर समाज की नींव को नष्ट करने की चुनौती दे रहीं थीं, जिससे क तीव्र वनाश का एजेंडा लागू करके डर, वासना और लालच के कुटिल षड्यंत्र से सभी को अव्यवस्थित कया जा सके।

महान संत का जन्म 15वीं सदी में असम के नौगांव जिले के बोरदुआ में शक्तिशाली भुइयाँ साम्राज्य के शाही परिवार में हुआ था। उन्होंने शासन करने के लए "गोमोष्ठा" को शाही उपाध बनाया। यद्यपि अपने जीवन के सूर्योदय से ही शंकरदेव के बारे में ऐसा माना जाता था क वो अपने जीवन में एक अलग लक्ष्य लेकर आए हैं। कशोरावस्था के प्रारम्भ में ही, अपनी प्रारम्भिक शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात उन्होंने पूरे भारत के कई पवत्र स्थानों क तीर्थयात्रा की और धार्मिक तथा सांस्कृतिक व भन्नताओं से प्रभावित हुए। उन्होंने प्रार्थनाओं और ईश्वर से निकटता की दिशा में एक मजबूत जुड़ाव विकसित कया। उन यात्राओं से लौटने के बाद उन्होंने गीत, नात और नृत्य का लेखन प्रारम्भ कया। उस समय देश के दूसरे भागों में नव वैष्णव धर्म प्रमुखता से प्रचलित हो रहा था। शंकरदेव भी इसके लोकाचार से प्रभावित थे और उन्होंने भारत के पूर्वोत्तर भाग, विशेष रूप से असम में, 'वैष्णव धर्म' के सद्वांतों का प्रसार कया। उन्होंने नृत्य, गीत, भावना और दूसरी साहित्यिक रचनाओं का प्रयोग लोगों के बीच वैष्णव मत को

फैलाने में कया। "हरि नाम" और "कीर्तन" की शिक्षा सर्व वद्यमान भगवान वष्णु की शरण में पाहुचने के एकमात्र मार्ग के रूप में दी गयी। समय बीतने के साथ, उनकी रचनाओं और वचारों ने अन्य संत लोगों तथा स्पष्ट रूप से बहुत से आम लोगों को उनके साथ शा मल होने के लए आकृष्ट कया। इसने स्वयं में क्रांति का एक रूप भी ले लया जहां सत्रीय संस्कृति का पालन जीवन जीने का मार्ग बन गया। इस प्रकार महापुरुष शंकरदेव व भन्न बुरे मार्गों से वैष्णव संस्कृति के मार्ग में लोगों को एकजुट करने में सक्षम थे।

श्रीमंत शंकरदेव एक बहुआयामी व्यक्तित्व थे; वे एक महान धार्मिक संत, संगीतकर, गायक, कलाकार व लेखक थे, जो लोगों तथा उनके वचारों को प्रभावित करने की क्षमता रखते थे। उनका दैवीय आचरण उन प्रमुख कारणों में से एक था जिससे व भन्न क्षेत्रों से लोग उनकी शरण में आ गए।

महापुरुष माधवदेव

महापुरुष माधवदेव, महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव के महान उत्तराधिकारी थे जिन्होंने असम में नव-वैष्णववाद के प्रतिमानों का प्रसार कया, जिसकी स्थापना श्रीमंत शंकरदेव द्वारा 15वीं सदी में की गयी थी। वे श्रीमंत शंकरदेव के प्रमुख शष्यों में से एक थे, और वे दोनों धार्मिक रुचियों और प्रक्रियाओं के मुद्दे पर एक कड़वे वाद-ववाद के बाद एकजुट हुए थे। जहां क माधवदेव एक ऐसी धार्मिक पृष्ठभूमि से आए थे जहां स्वर्ग के मार्ग की प्राप्ति के लए बल-वधान की क्रिया प्रचलन में थी, शंकरदेव के धर्म की शिक्षा के प्रस्तुतीकरण का प्रमुख बिन्दु "श्रवण" अर्थात् सुनना, और "कीर्तन" अर्थात् परमात्मा की शरण में निर्वाण की प्राप्ति हेतु हरि नाम का जाप करना था।

माधवदेव प्रभावित थे इस लए उन्होंने स्वयं को शंकरदेव के चरण में पूर्णरूप से शा मल कर लया और अंत तक वैष्णव मार्ग के सबसे निष्ठावान पाठ-प्रदर्शक बने रहे। उनकी गुरु-शष्य क्षेत्र की पराकाष्ठा को 'मण-कंचन' संयोग के नाम से जाना जाता है, जिसको शंकरदेव के आंदोलन के आधार को और मजबूत करने के उपकरण के रूप में महत्वपूर्ण घटना माना जाता है। अपने गुरु के पद-चन्हों का अनुसरण करते हुए, माधवदेव स्वयं हरिकीर्तन के भक्तिपूर्ण प्रचारक बन गए और अपने सहयोगियों, शष्यों और अनुयायियों की सहायता से वैष्णव धर्म के संदेश को दूर-दूर तक फैलाया। माधवदेव की महानतम रचनाएँ 'बोरगीत' और आठ 'अंकया नात' थे। भगवान वष्णु, उनके अवतारों और शंकरदेव में उनका वश्वास और भक्ति इतनी थी की उनके बरगीत के वष्यों में प्रभु तक पहुँचने के मार्ग के रूप में भगवान कृष्ण के जीवन, उनकी लीला अथवा प्रभाव, तथा गुरु शंकरदेव के प्रति भक्ति की छव थी। जब क उनके सभी नाटकों में भगवान कृष्ण के जीवन के व भन्न चरणों को प्रकट कया गया था जिनमें उनका बचपन सबसे महत्वपूर्ण होता था।

माधवदेव द्वारा रचित बोरगीत 'गो वंदा सन्ताहु बाला गोपाला' श्रीकृष्ण के बचपन के परिधानों व स्वरूप तथा ऐसी महानता के प्रति महादेव के भक्तिपूर्ण प्रेषण को समर्पित है।

श्रीमंत शंकरदेव के प्रति अपनी विशेष निष्ठा को प्रदर्शित करने के क्रम में माधवदेव ने भारत के एक अन्य वैष्णव संत वष्णुपुरी द्वारा मूलरूप से लिखित 'भक्तिरत्नावली' के संस्कृत श्लोकों का 'बृजवाली' भाषा में अनुवाद कराया। भक्तिरत्नावली संबंध की प्रगणना करती है जो क गुरु- शिष्य संबंध का आधार तैयार करता है। ऐसा माना जाता है कि माधवदेव ने इस कार्य का समापन अपने गुरु के प्रति अपने असीम आदर को प्रकट करते हुए श्रीमंत शंकरदेव के श्रमसाध्य मार्गदर्शन एवं निर्देशों के अनुसार किया। वैष्णव साहित्य का एक और रत्न नाम-घोषा, महापुरुष माधवदेव के अनुकरणीय वचनों से निकला। महापुरुषीय साहित्य की महान कलाकृति को देखते हुए यह 1000 प्रार्थनाओं का संकलन है। पुनः यह ईश्वर के नाम के गायन पर जोर देता है। इस पत्र रचना का अभी भी सर्वाधिक जाप किया जाता है और ईश्वर को समर्पित भक्तिपूर्ण प्रार्थनाओं को असम के लगभग प्रत्येक परिवार में गाया जाता है।

सत्र

नामघर

असमीया समाज की सर्वाधिक महत्वपूर्ण सामाजिक- सांस्कृतिक संस्था, नामघर को 19वीं शताब्दी में महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव द्वारा स्थापित किया गया था। महापुरुष शंकरदेव और उनके अनुयायियों का प्रमुख उद्देश्य असम में वैष्णव-वाद का प्रसार करना था। उस उद्देश्य को पूरा करने के क्रम में महापुरुष शंकरदेव ने सत्र तथा सत्र के अटूट अंग के रूप में नामघर की स्थापना की। लेकिन आजकल नामघर का अस्तित्व केवल सत्रों तक सीमित नहीं है। प्रत्येक असमीया गाँव में एक नामघर होता है।

"नामघर समूह-प्रार्थना के उद्देश्य के लिए एक खुला हाल होता है। वास्तविक तीर्थ-स्थल पर मूर्ति या शास्त्र को सामान्यतया: एक अलग घर में थोड़े ऊँचे व छोटे क्षेत्र में रखा जाता है। यह नामघर के पूर्वी छोर से जुड़ा रहता है। इसे मण-कूट कहा जाता है क्योंकि मण अर्थात् रत्न अथवा मूर्ति वहाँ रखी जाती है।" - डॉ. सत्येंद्रनाथ सरमा

महापुरुष शंकरदेव और उनके अनुयायियों ने असम में कृष्ण भक्ति-आन्दोलन का प्रसार किया और इसी प्रकार भक्तगण अपनी प्रार्थनाएँ भगवान कृष्ण को समर्पित करते हैं।

कृष्णाय बासुदेवाय दोइबकी नंदनाय च

नन्द गोप कुमाराय गो वंदाय नमो नमः

प्रचलित वैष्णव संस्कृति के अनुसार, "संहासन" नामघर के मणकूट (आमोही-घर) में रखा जाता है। भक्तगण इस स्थान को "वैकुण्ठ" मानते हैं जहां सर्वोच्च सत्ता, जिसकी वे पूजा करते हैं, वद्यमान है। महापुरुष शंकरदेव ने भी निम्न प्रकार से इसकी व्याख्या की:

बिचत्र चंद्रतप आचे तानी, अरिता मुरारी मुकुंतामोनी, हेना मंदिरे रत्ना संहासने, अचन्ता बोसी प्रभु नारायने,
कीर्तन, शंकरदेव

नामघर के मुख्य प्रार्थनाघर के सामने एक प्रवेश-द्वार, "बाटसोरा" या "कोरापट" निर्मित तथा सुसज्जित किया जाता है जो नामघर की सुन्दरता को बढ़ाता है। नामघर का प्रयोग खोल, ताल, दोबा, जोंखा आदि के साथ ईश्वर के नाम कीर्तन के लिए किया जाता है। नाम का तात्पर्य है, भगवान कृष्ण के नाम का जाप करना। प्रातःकाल से मध्यरात्रि तक ईश्वर की प्रार्थना करने का सम्पूर्ण कार्यक्रम "नामप्रसंग" कहलाता है। चौदह सेवाओं में वभाजित, दिन में समान्यतया चार बार किए जाने वाले नामप्रसंग को "चैध्यप्रसंग" कहा जाता है। भगवान की पूजा करने की सेवाएँ वहाँ की जाती हैं जहाँ बरगीत, नामघोषा, कीर्तन और भागवत का पाठ होता है।

नामघर का असमीया समाज में सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान लोगों के नैतिक तथा आध्यात्मिक चरित्र का निर्माण करना है। महापुरुष शंकरदेव ने भगवान कृष्ण की पूजा के माध्यम से समाज को जीवन का एक मार्ग दिखलाया।

“हेना जानी शशुसव एरा आन करमा,

धोइरु कुमारकाले भगवान धरमा,

पुरलाभा मनुष्य जन्मा नकारा बिफल,

चंतामोनी माधवारा चरनकमल..... ”

कीर्तन, महापुरुष शंकरदेव

महापुरुष शंकरदेव एक महान समाजसुधारक थे। नामघर समाज की सभी जातियों के लोगों के लिए खुला रखा गया। जीवन के सभी क्षेत्रों से लोग नामघर में बैठकर धार्मिक चर्चाओं में भाग ले सकते हैं। अंकित भावना के प्रदर्शन सहित नामघर में कई सांस्कृतिक गतिविधियाँ सम्पन्न की जाती हैं। अपने वास्तविक अर्थों में नामघर वलक्षण सामाजिक संगठनों में से एक है, जो असम के लोगों के बीच भाईचारे की भावना बढ़ाने में सहायता करता है।

नामघर पर केन्द्रित बहुत से छोटे कुटीर उद्योगों का भी विकास हुआ है। नामघर के लिए आवश्यक प्रमुख वस्तुएँ संहासन, कांसे की बनी जरई, लैम्प-स्टैंड (गोसा), भोर-ताल, डोबा, खोल, बांस से निर्मित मुखौटे आदि बनाए जाते थे

जो क नामघर के लए अत्यंत आवश्यक वस्तुएँ थीं। नामघर की दीवारों पर ईश्वर के व भन्न अवतारों को चित्रित करने के लए कलाकार अति महत्वपूर्ण थे। व भन्न धा र्मक मामले साची-पात में शा मल कए गए और अप्रत्यक्ष रूप से प्रत्येक व्यक्ति आ र्थक रूप से लाभान्वित हुआ।

List of Sattra

** सत्र की सूची असम और पश्चिम बंगाल में सत्रों की जनगणना के आधार पर तैयार की गयी है, जिसे आगे बढ़ाया है पुरातत्व निदेशालय ने, असम सरकार, वर्ष 2005 में।

sattriya culture

सत्रीय संस्कृति

बरगीत

श्रीमंत शंकरदेव और श्री श्री माधवदेव के सर्वोच्च रत्न बरगीत, भक्तिपूर्ण गीत हैं जो हरि (भगवान वष्णु या श्री कृष्ण अवतार) की प्रशंसा में गाए (कीर्तन का कार्य) जाते हैं। दोनों महान संतों ने स्वयं इन गीतों के लए "गीत" शब्द का प्रयोग किया जब क इन गीतों की संगीतमय श्रेष्ठता को मान्यता देने के क्रम में बाद में उनके शष्यों द्वारा "बर" उपसर्ग जोड़ा गया।

श्रीमंत शंकरदेव और माधवदेव ने श्रवण और कीर्तन का उपदेश दिया। बरगीत संगीतमय प्रकटीकरण है जो की गायन व जाप के लए छंद के रूप में लखे जाते हैं। बरगीत के इस लक्षण के कारण वे सत्रों और ग्रामीण नामघरों में होने वाले नाम-प्रसंग या नाम-कीर्तन के आवश्यक भाग का निर्माण करते हैं।

दोनों गुरुओं द्वारा र चत गीत उनके अं कया नात में परिल क्षत होते हैं जिन्हें आंकर गीत या नटोर गीत कहा जाता है। बरगीत और आंकर गीत में अंतर आवश्यक रूप से वषयगत है। बरगीत भक्ति के रूपों को प्रदर्शित करने वाले प्रार्थना गीत हैं जब क आंकर गीत नात के व भन्न अंकों पर आधारित होते हैं और इस प्रकार भक्ति के अतिरिक्त यह व भन्न प्रकार के वषयों को शा मल करता है।

बोरगीत शास्त्रीय संगीत के स्तर पर मान्यता प्राप्त करने करने का उपयोगी है और मंच पर बाहर लाने के प्रयास में इसका स्वरूप सरल और स्वीकार्य प्रकृति में परिवर्तित हो चुका है जिसने शास्त्रीय रूप की जटिलता को दूर कर दिया है। जब क बरगीत रागों पर आधारित हैं, जो दिन के उस समय पर निर्भर करते हैं जब उनका जाप किया जाता है। बरगीत भी उनसे जुड़ी हुई तालों के अनुसार निष्पादित कए जाते हैं।

बरगीत के प्रदर्शन के समय प्रयोग कए वाले प्रमुख उपकरण खोल और ताल हैं। खोल दो सरों वाला बैरल के आकार का ड्रम होता है जिसपर दोनों हाथों से ताल या लयबद्ध संयोजन के साथ थाप लगाई जाती है। जहां क ताल प्रहार और ताल की रिक्ति को पूरा करने के लए खोल के साथ प्रदर्शित की जाती है।

बहुत से दूसरे गीत जो दोनों गुरुओं के शिष्यों और अनुयायियों द्वारा रचे गए, उन्हें बरगीत नहीं माना गया है, यद्यपि संयोजन में कोई ऐसा अंतर नहीं किया गया है।

जैसा क पहले ही ऊपर उल्लेख किया जा चुका है क बरगीत रागों पर आधारित होते हैं। बरगीत में दो या अधिक रागों के संयोजन से उत्पन्न हुए एकांकी मश्रत या वभन्न प्रकृति के कुल छत्तीस राग पाए गाय हैं। पुनः कुछ ऐसे राग हैं जो केवल अंकित गीत में पाए जाते हैं और बरगीतों का हिस्सा नहीं हैं। बरगीत और संगीत के दूसरे भारतीय शास्त्रीय रूपों जैसे हिंदुस्तानी में अंतर के प्रमुख लक्षण यह है क बरगीत भक्तिरस का उत्साही प्रकटीकरण है जब क अन्य वभन्न मानसकताओं और रूपों के साथ प्रस्तुत कए जा सकते हैं।

तालों के परिपेक्ष्य में, यह तीन भागों से बना है। गा-बजाना अथवा मुल-बजाना को प्रत्येक जगह ताल के मुख्य भाग के रूप में मान्यता दी जाती है, जो क गीत अथवा इसके भाग के दौरान कई बार दोहराया जाता है। दूसरे भाग को घाट कहा जाता है जो क अस्थायी या अंतिम रूप से ताल की पूर्णता को इंगित करता है।

ताल का तीसरा भाग काक या कोक के नाम से जाना जाता है जो की आवश्यक रूप से ग-मन का एक अलंकृत रूप है तथा घाट द्वारा इसका अनुसरण किया जाता है।

परंपरागत रूप से एक कलाकार बरगीत का निम्न लय क्रम में प्रदर्शन करता है: यह घाट के साथ प्रारम्भ होता है, फिर गायक ग-मन शुरू करता है तब जिसकी समाप्ति घाट के दोहराव के साथ होती है। अंततः काक का प्रदर्शन किया जाता है और इसके बाद पुनः घाट को दोहराया जाता है। वभन्न सत्रों द्वारा अनुकरण की जाने वाली परम्पराओं के आधार पर यह प्रदर्शन में भन्न हो सकता है।

श्रीमंत शंकरदेव द्वारा रचित कुल बरगीतों की संख्या 240 थी, लेकिन उनके शिष्यों के घर पर आग लग जाने की एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना के कारण उनमें से अधिकांश जल गए और केवल 34 ही शिष्यों की याददाश्त के आधार पर संकलित कए जा सके। इस घटना ने शंकरदेव को अंदर तक हिला दिया जिन्होंने पूर्ण रूप से किसी अन्य बरगीत की रचना न करने का निर्णय लिया। इसके बजाय, उन्होंने अपने प्रमुख शिष्य श्री माधवदेव को रचना जारी रखने हेतु निर्देश दिया। महापुरुष माधवदेव ने अपने हिस्से में लगभग 191 बरगीतों की रचना की जिनमें से केवल 157 ही मल सके।

नोट: यह लेख डा. पबीत्रप्राण गोस्वामी की शोधपुस्तक 'बरगीत: ए म्यूजिकोलॉजिकल एक्सप्लोरेशन' की वषयवस्तु पर व्यापक रूप से आधारित है। डा. गोस्वामी सत्रीय संस्कृति के एक वद्वान हैं और बरगीत पर गहन शोध कर रहे हैं। वे असम में बरगीत के पाठ से संबन्धित प्र शक्षण पर कई कार्यशालाएँ आयोजित कर चुके हैं।

Sattriya Nritya

सत्रीया नृत्य

महान वैष्णव संत श्रीमंत शंकरदेव और श्री श्री माधवदेव की प्रशंसनीय रचना 'सत्रीय नृत्य' थी, जिसका यह नाम इस लए पड़ा क्योंकि क इसका संरक्षण, संस्कृतिकरण, पोषण, शै क्षक उद्देश्य के लए अध्ययन मठों में हुआ, जिन्हें सत्र कहा जाता था। अपने स्वरूप और प्रस्तुतीकरण में व शष्ट, नृत्य के द्वारा कहानी कहने की कला जो क मुद्राओं और अलंकारों के माध्यम से उत्साहपूर्ण अ भनय को और उत्कृष्ट बनाता है, अब इस नृत्य को भारत के शास्त्रीय नृत्य के रूप में स्था पत करता है।

सत्रीया नृत्य का वकास महापुरुष क प वत्र रचना अं कया भावना के नृत्यों से उत्पन्न हुआ। इस तरह के नृत्य का स्वरूप श्रीमंत शंकरदेव के द्वारा परिकल्पित "सूत्रधार" के नृत्य और अ भनय के माध्यम से बंधनमुक्त हो गया। सूत्रधार भावना का एकीकृत भाग है जो वास्त वक नाटक प्रारम्भ होने से पहले नात या "अंको" की कहानी का संक्षेपण करता है। सूत्रधार द्वारा कहानी कहने की कला नृत्य और गायन के माध्यम से प्रद र्शत होती है।

जब क इस अनुकरणीय रचना की क्षमता को समझने के लए व भन्न वद्वानों जैसे डॉ. महेश्वर नेवुग, डॉ. जतिन गोस्वामी, रोजेश्वर सै कया, डॉ. जगन्नाथ महंत आदि ने लेखन, प्रकाशन तथा राष्ट्रीय स्तर पर व भन्न सभाओं एवं सम्मेलनों में शा मल होकर तथा सत्रीय नृत्य के वद्वानों व अन्य वद्वानों के सहयोग से राष्ट्रीय स्थान पर रखा।

Bhaona

अं कया भावना

अं कया भावना की रचना, जो क खोल और संगीत के रूप में ताल सहित गीत के साथ नृत्य और नाटक का एक रूप है, यह महापुरुष शंकरदेव और महापुरुष श्री श्री माधवदेव की 15वीं सदी के दौरान एक व शष्ट रचना है। भावना में सूत्रधार का शा मल होना भी व शष्ट है, जिसके माध्यम से अं कया भावना की शुरुआत हुयी। इसे अं कया भावना इस लए कहा जाता है क्योंकि क ये अंकों से बना है, जिसका तात्पर्य है "एकात्मक अ भनय"। अं कया भावना का प्रयोग लोगों के समक्ष भक्ति संस्कृति के आंतरिक अर्थ को प्रद र्शत करने के लए कया जाता था।

इन नाटकों में गीतों को "अं कया- गीत" अथवा "नाटर गीत" कहा जाता है, जो क कई अंकों पर आधारित है।

महापुरुष शंकरदेव ने 6 अं कया भावनाओ क रचना की। उनमें से 5 भगवान श्री कृष्ण की "लीला" को प्रद र्शत करते हैं और 1 रामचंद्र की लीला को प्रद र्शत करता है। नाट के नाम हैं:

रुक्मिणी हरण,

पारिजात हरण,

का लयो दमन,

के ल गोपाल,

पत्नी प्रसाद,

राम बिजय

इनके अतिरिक्त महापुरुष माधवदेव ने भगवान श्री कृष्ण के बाल्यकाल एवं रासलीला का गुणगान करते हुए निम्न ल खत नाट की रचना भी की:

दो धमथोन या अर्जुन भंजन,

चोर धरा,

भु मलेतोया

पम्पोरागुचुआ,

भोजन बेहार,

रासझूमुरा,

कोटोरा खेलोआ,

भूसन हेरोआ